विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र — डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
किरातार्जुनीयम - प्रथम सर्ग, महाराजा कॉलेज, आरा
पद्योश व्याख्या — दिनांक - 17/08/2020

अनारतं तेन पदेषु लम्भिता
विभज्य सम्यग्विनियोगसत्क्रियाः ।
फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीः
उपेत्य संघर्षमिवार्थसम्पदः ॥15॥

अन्वयः- तेन पदेषु सम्यक् विभज्य लम्भिताः विनियोगसत्क्रियाः, उपायाः संघर्षम् उपेत्य इव परिबृंहितायतीः अर्थसम्पदः अनारतं फलन्ति।

अन्वयार्थ - (तेन पदेषु सम्यक् विभज्य) उसके द्वारा उचित स्थानों पर समुचित विभाग करके (लम्भिताः) पहुँचाये गये (विनियोग-सत्क्रियाः) अर्थात् प्रयुक्त विनियोग द्वारा सुन्दर ढंग से समादृत साम, दाम, दण्ड, भेद आदि (उपायाः) उपाय ~~आदि~~ (संघर्षम् उपेत्य इव परिबृंहितायतीः) मानो परस्पर होड़ सी लगाकर भविष्य में उत्तरोत्तर बढ़नेवाली (अर्थसम्पदः) स्थाई धनसम्पत्तियाँ (अनारतं फलन्ति) निरन्तर

उत्पन्न कर रहे हैं।

~~प्रसङ्गव्याख्या~~ भावार्थ - दुर्योधन ने सभी उपायों का समुचित विनियोग किया है, जिसके परिणाम स्वरूप उसकी सभी सम्पत्तियाँ होड़ लगाकर बढ़ रही हैं।

पदव्याख्या - अनारतम् - निरन्तर, आ + रम + क्त = आरतम्, न आरतम् (नञ् तत्पु०)। अविद्यमानं आरतं यस्मिन्। तेन = उस दुर्योधन के द्वारा। पदेषु समिताः = उचित स्थानों पर पहुँचायी गयी। सम + इण् + क्त (कर्मणि)। सम्यक् विभज्य = भलीभाँति विभाजन करके। सम्यक् = सम + अञ्च + क्विन्। विभज्य = वि + भज् + क्त्वा (ल्यप्)। विनियोगसत्क्रियाः = उचित विनियोग के द्वारा जिनका सत्कार किया गया है। विनियोग = उचित कार्य में लगाना। वि + नि + युज् + घञ् विनियोगः सत्क्रिया, येषां ते (बहु०) विनियोग एव सत्क्रियाः विनियोगसत्क्रियाः (क०धा०)। उपायाः फलन्ति = साम, दान, दण्ड, भेद आदि फलीभूत होते हैं, फल उत्पन्न करते हैं। उपायाः = उपैति अथवा उपायते एभिः, उप + इ + अच् अथवा उप + अय + घञ्। सामान्यतः उपाय चार हैं - 'भेदो दण्डः सामदानमित्युपायचतुष्टयम्' - अमरकोश। इसके अतिरिक्त माया, उपेक्षा, इन्द्रजाल, अथवा मन्त्र, औषध, इन्द्रजाल - तीन और उपाय माने जाते हैं। परिबृंहितायतीः = उज्ज्वल भविष्यवाली, चारों ओर फैलनेवाली, सम्पत्तियों को। परिबृंहिता आयतिः यासां ताः (बहु०) परि + बृंह् + णिच् + क्त + टाप्, परिबृंहिता, आयतिः = आ + यम् + क्तिन् (भावे)।

Date ___/___/______ Page No.: ________

आयति: = समृद्धिशाली भविष्य । संघर्षमुपेत्य इव = होड़ सी लगाकर, प्रतिद्वन्द्विता करती हुई सी, सम् + घृष् + अ (घञ्) । उपेत्य = प्राप्तकर, उप + इ + क्त्वा (ल्यप्) । अर्थसम्पदः = अर्थ सम्पत्तियाँ । अर्थानां सम्पदः अर्थ सम्पदः, ताः (ष० तत्पु०), सम् + पद् + क्विप् । अथवा अर्था एव सम्पदस्ताः ।

टिप्पणी - 'संघर्षम् उपेत्य' में उत्प्रेक्षालंकार है। लक्षण - 'सम्भावना स्यादुत्प्रेक्षा' - मम्मट ॥८॥

Scanned with CamScanner